IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भारत की विदेश नीति को आकार देने में सॉफ्ट पावर की भूमिकाः दक्षिण एशिया में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का विश्लेषण"

[1]डॉ बीरेंद्र प्रताप

सहायक आचार्य

राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय महिला महाविद्यालय

हरैंया बस्ती उत्तर प्रदेश

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु)

सिद्धार्थनगर

सारः यह शोध पत्र भारत की विदेश नीति को आकार देने में सॉफ्ट पावर की महत्वपूर्ण भूमिका पर गहनता से चर्चा करता है, जिसमें दक्षिण एशिया में इसकी सांस्कृतिक कूटनीति पर विशेष ध्यान दिया गया है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक संबंधों और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ भारत ने सद्भावना को बढ़ावा देने, राजनयिक संबंधों को मजबूत करने और क्षेत्र में प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए रणनीतिक रूप से सॉफ्ट पावर का उपयोग किया है। अध्ययन भारत द्वारा नियोजित विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों की जांच करता है, जिसमें शैक्षिक आदान–प्रदान, बॉलीवुड की वैश्विक अपील और योग और बौद्ध धर्म जैसी आध्यात्मिक प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है, ताकि पड़ोसी देशों के बीच अपना प्रभाव बढ़ाया जा सके।

जबकि भारत की सांस्कृतिक कूटनीति ने विशेष रूप से नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है, यह पत्र इसके सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है। इन चुनौतियों में क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन के साथ, और कुछ दक्षिण एशियाई देशों के बीच यह धारणा शामिल है कि भारत की सांस्कृतिक कूटनीति एक प्रकार का आधिपत्य प्रभाव है। भारत की सॉफ्ट पावर की प्रभावशीलता इसकी सांस्कृतिक पहलों की असमान पहुंच से और भी जटिल हो जाती है, जो अक्सर ग्रामीण और हाशिए के समुदायों को शामिल करने में विफल रहती हैं। यह शोधपत्र भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए रणनीतिक सिफारिशों के साथ समाप्त होता है। इनमें एक अधिक समावेशी दृष्टिकोण अपनाना शामिल है जो पड़ोसी देशों में समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँच बढ़ाता है, और युवा, तकनीक–प्रेमी दर्शकों को जोड़ने के लिए उभरती डिजिटल तकनीकों को शामिल करके भारत के सांस्कृतिक कूटनीति उपकरणों का आधुनिकीकरण करता है। इसके अतिरिक्त, शोधपत्र सांस्कृतिक प्रभुत्व की

धारणाओं का मुकाबला करने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक संस्थानों के साथ सहयोग करने का सुझाव देता है। भविष्य के शोध दिशा–निर्देश प्रस्तावित हैं, जो भारत की सॉफ्ट पावर के विस्तार में डिजिटल तकनीकों की भूमिका और दक्षिण एशिया में विविध जनसांख्यिकीय समूहों पर सांस्कृतिक कूटनीति के प्रभाव का अध्ययन करने पर केंद्रित हैं।

सूचक शब्दः सांस्कृतिक कूटनीति, दक्षिण एशिया, आध्यात्मिक कूटनीति, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, डिजिटल प्रौद्योगिकी, आदि।

1. परिचय

सॉफ्ट पावर, राजनीतिक वैज्ञानिक जोसेफ नाई द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है, जो किसी देश की सांस्कृतिक अपील, मूल्यों और विदेश नीतियों के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता को संदर्भित करता है, न कि जबरदस्ती या बल के माध्यम से। हार्ड पावर के विपरीत, जो सैन्य और आर्थिक ताकत पर निर्भर करता है, सॉफ्ट पावर आकर्षण और अनुनय के माध्यम से अन्य राज्यों की प्राथमिकताओं को आकार देता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में, सॉफ्ट पावर को वैश्वीकृत दुनिया में विदेश नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में तेजी से पहचाना जा रहा है। यह राष्ट्रों को आक्रामक रणनीति का सहारा लिए बिना गठबंधन बनाने, सहयोग को बढ़ावा देने और अपनी अंतरराष्ट्रीय स्थिति को बढ़ाने की अनुमति देता है। भारत के लिए, सॉफ्ट पावर विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि यह खुद को विश्व मंच पर एक जिम्मेदार और प्रभावशाली खिलाड़ी के रूप में पेश करना चाहता है, खासकर अपने निकटतम पड़ोस, दक्षिण एशिया में[1]।

भारत के सॉफ्ट पावर उद्देश्य

भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोकतांत्रिक मूल्यों और अपने पड़ोसियों के साथ ऐतिहासिक संबंधों में गहराई से निहित है। देश द्वारा सॉफ्ट पावर के रणनीतिक उपयोग का उद्देश्य सद्भावना को बढ़ावा देना, राजनयिक संबंधों को मजबूत करना और दक्षिण एशिया में प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के प्रभाव का मुकाबला करना है। भारत की सॉफ्ट पावर का एक प्रमुख घटक सांस्कृतिक कूटनीति इस रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान, शैक्षिक कार्यक्रमों और अपनी कला, संगीत, साहित्य और आध्यात्मिक परंपराओं को बढ़ावा देने के माध्यम से, भारत अपने पड़ोसियों के साथ स्थायी संबंध बनाने का प्रयास करता है[2]। इसके अतिरिक्त, भारत का मीडिया और मनोरंजन उद्योग, विशेष रूप से बॉलीवुड, पूरे क्षेत्र में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को पेश करने के लिए एक शक्तिशाली वाहन के रूप में कार्य करता है। इन परिसंपत्तियों का लाभ उठाकर, भारत अपने प्रभाव को बढ़ाने और एक ऐसे क्षेत्र में अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित करने का लक्ष्य रखता है, जो अक्सर जटिल राजनीतिक गतिशीलता और ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता की विशेषता रखता है।

शोध के उद्देश्य और प्रश्न

इस शोध का उद्देश्य दक्षिण एशिया में अपनी सांस्कृतिक कूटनीति पर विशेष ध्यान देने के साथ भारत की विदेश नीति को आकार देने में सॉफ्ट पावर की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन भारत द्वारा अपनी सॉफ्ट पावर को प्रोजेक्ट करने के लिए नियोजित विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों की जांच करेगा और अपने पड़ोसी देशों की धारणाओं और नीतियों को प्रभावित करने में उनकी प्रभावशीलता का आकलन करेगा।

प्रमुख शोध प्रश्नों में शामिल हैं:

- भारत की सांस्कृतिक कूटनीति दक्षिण एशियाई देशों के साथ उसके संबंधों को कैसे प्रभावित करती है?
- भारत की सॉफ्ट पावर ने इस क्षेत्र में अपनी विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में किस हद तक योगदान दिया है?
- सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों में भारत को किन चुनौतियों और सीमाओं का सामना करना पड़ रहा है?

2. भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का ऐतिहासिक संदर्भ

प्राचीन और उत्तर–औपनिवेशिक जड़ें

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति अपने प्राचीन इतिहास में गहराई से निहित है, जहाँ इसकी सभ्यता ने एशिया और उसके बाहर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदान–प्रदान में एक केंद्रीय नोड के रूप में कार्य किया। भारतीय उपमहाद्वीप, अपनी विविध भाषाओं, धर्मों और दर्शन के साथ, सांस्कृतिक विकास का एक ऐसा केंद्र था जिसने व्यापार, प्रवास और धार्मिक प्रसार के माध्यम से विशाल क्षेत्रों को प्रभावित किया। प्राचीन भारत का प्रभाव दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और भारतीय दर्शन के प्रसार में देखा जा सकता है, जो मध्य एशिया और पूर्वी एशिया तक पहुँच गया[3]। उदाहरण के लिए, सिल्क रोड न केवल वस्तुओं के लिए एक व्यापार मार्ग था, बल्कि विचारों के आदान–प्रदान का एक चौनल भी था, जहाँ भारतीय विद्वानों, भिक्षुओं और व्यापारियों ने भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेष रूप से बौद्ध धर्म ने भारत और उसके पड़ोसियों के बीच एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य किया। सम्राट अशोक जैसे मिशनरियों के माध्यम से श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत, म्यांमार और उससे आगे के देशों में बौद्ध शिक्षाओं और प्रथाओं का प्रसारण, जिन्होंने एशिया भर में दूत भेजे, ने दीर्घकालिक सांस्कृतिक संबंधों की नींव रखी। इसी तरह, रामायण और महाभारत जैसे हिंदू महाकाव्यों ने इंडोनेशिया, थाईलैंड और कंबोडिया जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के सांस्कृतिक ताने–बाने में अपनी जगह बनाई, और स्थानीय साहित्य, कला और धार्मिक प्रथाओं को प्रभावित किया। ये प्राचीन संबंध केवल ऐतिहासिक फुटनोट नहीं हैं, बल्कि गहरे सांस्कृतिक भंडार हैं, जिनका उपयोग समकालीन भारत अपने सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों में करता है[4]।

उपनिवेशवाद के बाद के युग में भारत ने सांस्कृतिक कूटनीति के प्रति अपने दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव देखा। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारत को शीत युद्ध की जटिलताओं से निपटते हुए खुद को एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की चुनौती का सामना करना पड़ा। प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई और शांति, उपनिवेशवाद–विरोध और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की वकालत करते हुए वैश्विक मंच पर खुद को एक नैतिक नेता के रूप में पेश करने की कोशिश की। भारत की विदेश नीति के लिए नेहरू का दृष्टिकोण केवल राजनीतिक और आर्थिक आयामों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसमें अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के निर्माण और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के साधन के रूप में सांस्कृतिक कूटनीति पर जोर दिया गया था[5]।

प्रमुख संस्थाओं का विकास

प्रमुख संस्थाओं की स्थापना ने भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को औपचारिक रूप देने और उसका विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), जिसकी स्थापना 1950 में स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने की थी। ICCR की परिकल्पना सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने और दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के प्राथमिक साधन के रूप में की गई थी। इसका मिशन सांस्कृतिक, शैक्षणिक और बौद्धिक आदान–प्रदान के माध्यम से भारत और अन्य देशों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देना था।

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देने में प्ब्ब् की भूमिका बहुआयामी रही है। यह भारत की शास्त्रीय और समकालीन कला, संगीत, नृत्य और साहित्य को प्रदर्शित करते हुए विभिन्न देशों में सांस्कृतिक उत्सवों, प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों के आयोजन में सहायक रहा है। ये आयोजन भारत की सांस्कृतिक विविधता और कलात्मक उत्कृष्टता की झलक पेश करते हैं, जिससे विदेशों में देश की सकारात्मक छवि बनाने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, ICCR विदेशी कलाकारों, विद्वानों और सांस्कृतिक व्यवसायियों को भारत आमंत्रित करके सांस्कृतिक आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाने में शामिल रहा है, इस प्रकार अंतर–सांस्कृतिक संवाद और समझ को बढ़ावा देता है[6]।

ICCR की प्रमुख रणनीतियों में से एक दुनिया भर के प्रमुख शहरों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना रही है। ये केंद्र सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं, भारतीय भाषाओं, संगीत, नृत्य और योग में कक्षाएं प्रदान करते हैं और भारतीय संस्कृति और इतिहास पर प्रदर्शनियों, फिल्म स्क्रीनिंग और व्याख्यानों की मेजबानी करते हैं। इन केंद्रों के माध्यम से, प्ब्ब् का लक्ष्य स्थानीय आबादी के साथ निरंतर जुड़ाव बनाना और दीर्घकालिक सांस्कृतिक संबंध बनाना है। दक्षिण एशिया में, इन केंद्रों ने अपने पड़ोसियों, विशेष रूप से नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों को बनाए रखने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ICCR भारत की शैक्षिक कूटनीति में भी सबसे आगे रहा है, जो इसकी सांस्कृतिक कूटनीति का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। विकासशील देशों, खास तौर पर दक्षिण एशिया और अफ्रीका के छात्रों को

छात्रवृत्ति प्रदान करके, ICCR ऐसे व्यक्तियों का एक नेटवर्क बनाने में मदद करता है, जिन्हें भारत की संस्कृति और मूल्यों की गहरी समझ और सराहना है। विदेश मंत्रालय के सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग की स्थापना 2006 में हुई थी, और इसने भारत की व्यापक विदेश नीति रूपरेखा में सांस्कृतिक कूटनीति को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह प्रभाग विदेशों में भारत की छवि को गढ़ने, सोशल मीडिया के माध्यम से विदेशी जनता से जुड़ने और विभिन्न पहलों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार है।

3. सांस्कृतिक कूटनीति के उपकरण और रणनीतियाँ

शैक्षिक और सांस्कृतिक पहल

शैक्षिक और सांस्कृतिक पहल लंबे समय से भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति का केंद्र रही है, खासकर दक्षिण एशिया में, जहाँ ऐतिहासिक संबंध और साझा सांस्कृतिक विरासत ऐसी कूटनीति के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करती है। शैक्षिक आदान–प्रदान और छात्रवृत्तियाँ दीर्घकालिक संबंध बनाने और भारत और उसके पड़ोसियों के बीच सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम करती हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) और विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों के माध्यम से भारत सरकार दक्षिण एशियाई देशों के छात्रों को कई तरह की छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। ये छात्रवृत्तियाँ छात्रों को भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं, अक्सर प्रतिष्ठित संस्थानों में, जिससे ऐसे पूर्व छात्रों का एक नेटवर्क बनता है जो भारतीय संस्कृति, मूल्यों और समाज से परिचित होते हैं। इनमें से कई पूर्व छात्र अपने गृह देशों में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होते हैं, जिससे भारत के बारे में अनुकूल धारणा बनती है और द्विपक्षीय संबंधों को और भी मजबूत बनाने में मदद मिलती है।

ये शैक्षिक पहल सिर्फ अकादमिक आदान–प्रदान के बारे में नहीं हैंय इनमें सांस्कृतिक विसर्जन भी शामिल है। भारत में अंतर्राष्ट्रीय छात्र अक्सर भारतीय परंपराओं, त्योहारों और भाषाओं से परिचित होते हैं, जो देश के साथ उनके जुड़ाव को और भी गहरा बनाता है। इसके अलावा, भारत कई तरह के सांस्कृतिक उत्सवों और कार्यक्रमों का आयोजन करता है जो इसकी विविध कलात्मक परंपराओं को बढ़ावा देते हैं। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (IFFI), शास्त्रीय संगीत और नृत्य महोत्सव और साहित्यिक उत्सव जैसे कार्यक्रम पूरे क्षेत्र से प्रतिभागियों और दर्शकों को आकर्षित करते हैं, जो भारत के समृद्ध सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रदर्शित करते हैं। ये कार्यक्रम न केवल भारत की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं बल्कि दक्षिण एशियाई देशों के बीच संवाद और सहयोग के लिए मंच के रूप में भी काम करते हैं, जिससे क्षेत्र में एक सांस्कृतिक नेता के रूप में भारत की छवि मजबूत होती है[7]।

मीडिया और मनोरंजन

भारत का मीडिया और मनोरंजन उद्योग, विशेष रूप से बॉलीवुड, दक्षिण एशिया में देश के सांस्कृतिक प्रभाव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बॉलीवुड, अपनी फिल्मों के विशाल उत्पादन के साथ, जो पूरे क्षेत्र में व्यापक रूप से देखी जाती हैं, भारतीय संस्कृति, मूल्यों और जीवन शैली के प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण वाहन के रूप में कार्य करती हैं। बॉलीवुड फिल्मों की अपील भाषाई

और राष्ट्रीय सीमाओं को पार करती है, जिससे वे सांस्कृतिक कूटनीति का एक शक्तिशाली उपकरण बन जाती हैं। प्रेम, परिवार और नैतिक मूल्यों के विषयों को दर्शाने वाली फिल्में दक्षिण एशिया के दर्शकों को पसंद आती हैं, जहाँ सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड अक्सर भारतीय सिनेमा में दिखाए जाने वाले मानदंडों से मेल खाते हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल जैसे देशों में बॉलीवुड सितारों की व्यापक लोकप्रियता उद्योग की सॉफ्ट पावर को रेखांकित करती है, जिससे एक साझा सांस्कृतिक स्थान बनता है जो भारत के अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को मजबूत करता है[8]।

भारतीय टेलीविजन भी सांस्कृतिक कूटनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दक्षिण एशिया में प्रसारित होने वाले भारतीय सोप ओपेरा और रियलिटी शो के दर्शक बहुत अधिक हैं और वे इस क्षेत्र में लोकप्रिय संस्कृति को प्रभावित करते हैं। ये टेलीविजन कार्यक्रम अक्सर भारतीय समाज और मूल्यों को दर्शाते हैं, जो भारत की सांस्कृतिक पहचान और जीवन शैली को सूक्ष्मता से बढ़ावा देते हैं। इन शो की कथाएँ, जो अक्सर पारिवारिक गतिशीलता, सामाजिक मुद्दों और नैतिक दुविधाओं के इर्द–गिर्द घूमती हैं, पड़ोसी देशों के दर्शकों के साथ जुड़ती हैं, जिससे भारत के साथ सांस्कृतिक आत्मीयता की भावना बढ़ती है। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्म के उदय ने भारतीय मीडिया और मनोरंजन की पहुँच का विस्तार किया है, जिससे भारतीय सामग्री वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ हो गई है। नेटफ्लिक्स और अमेजॅन प्राइम जैसी स्ट्रीमिंग सेवाएँ भारतीय फिल्में और सीरीज पेश करती हैं जो न केवल दक्षिण एशिया में बल्कि दुनिया भर में दक्षिण एशियाई प्रवासियों के बीच भी लोकप्रिय हैं। भारतीय संस्कृति का यह डिजिटल प्रसार वैश्विक सांस्कृतिक पदचिह्न बनाकर इसकी सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है[9]।

आध्यात्मिक और धार्मिक

कूटनीति भारत की आध्यात्मिक विरासत इसकी सांस्कृतिक कूटनीति का एक और आधारशिला है, खासकर दक्षिण एशिया में, जहाँ धार्मिक और आध्यात्मिक संबंध गहरे हैं। भारत हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म सहित कई प्रमुख विश्व धर्मों का जन्मस्थान है, जिनका इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव है। भारत की आध्यात्मिक परंपराओं, विशेष रूप से योग और बौद्ध धर्म को बढ़ावा देना इसकी सॉफ्ट पावर रणनीति का एक प्रमुख तत्व बन गया है।

योग, जिसकी जड़ें प्राचीन भारतीय दर्शन में हैं, एक वैश्विक घटना बन गई है, जो शांति, कल्याण और आध्यात्मिक सद्भाव का प्रतीक है। भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, दक्षिण एशियाई देशों सहित दुनिया भर में मनाया जाता है, जहाँ योग को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध के रूप में अपनाया गया है। भारत द्वारा योग को बढ़ावा देना केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं हैय यह भारत की छवि को प्राचीन ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत के रूप में पेश करने के बारे में है। भारत और विदेश दोनों में योग कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके, भारत सरकार सक्रिय रूप से योग को एक सांस्कृतिक निर्यात के रूप में बढ़ावा देती है जो भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाती है[10]।

बौद्ध धर्म भारत की आध्यात्मिक कूटनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, खासकर दक्षिण एशिया में, जहाँ बौद्ध समुदाय प्रचलित हैं। बोधगया, सारनाथ और नालंदा जैसे स्थलों के आसपास केंद्रित भारत की बौद्ध विरासत पूरे क्षेत्र से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करती है, जिससे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध बढ़ते हैं। भारत ने श्रीलंका, भूटान, नेपाल और म्यांमार जैसे देशों के साथ बौद्ध संबंधों को बढ़ावा देने के लिए कूटनीतिक प्रयास भी किए हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार जैसी पहल, जो कभी बौद्ध शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था, और बौद्ध सर्किट को तीर्थयात्रा मार्ग के रूप में विकसित करना, आध्यात्मिक कूटनीति के माध्यम से अपनी सॉफ्ट पावर को मजबूत करने की भारत की रणनीति का हिस्सा है। ये प्रयास महत्वपूर्ण बौद्ध आबादी वाले देशों में दृढ़ता से प्रतिध्वनित होते हैं, जिससे आध्यात्मिक नेता और बौद्ध विरासत के संरक्षक के रूप में भारत की छवि बढ़ती है।

4. दक्षिण एशियाई संबंधों पर सांस्कृतिक कूटनीति का प्रभाव

देश–विशिष्ट विश्लेषण

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का दक्षिण एशियाई देशों, विशेष रूप से नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ उसके संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जहाँ साझा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों ने कूटनीतिक जुड़ाव के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया है। नेपाल में, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति ऐतिहासिक और धार्मिक संबंधों से गहराई से जुड़ी हुई है, विशेष रूप से हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के माध्यम से, जो दोनों नेपाली संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा शैक्षिक छात्रवृत्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और नेपाल में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की उपस्थिति द्वारा सुगम सांस्कृतिक आदान–प्रदान की अनुमति देती है। इन पहलों के माध्यम से भारत द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने से आम तौर पर सद्भावना को बढ़ावा मिला है, जिससे एक करीबी, हालांकि कभी–कभी तनावपूर्ण, द्विपक्षीय संबंध बनाए रखने में मदद मिली है। नेपाल में बॉलीवुड, भारतीय टेलीविजन और संगीत का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है, जो एक साझा सांस्कृतिक स्थान में योगदान देता है जो दोनों देशों के बीच बंधन को मजबूत करता है[11]।

हालाँकि, नेपाल में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति चुनौतियों से रहित नहीं रही है। घरेलू मामलों में कथित भारतीय हस्तक्षेप के प्रति नेपाली संवेदनशीलता कभी–कभी संबंधों को खराब करती है। उदाहरण के लिए, 2015 में नेपाल की नाकाबंदी के दौरान, भारत विरोधी भावना में उछाल आया था, जिसने राजनीतिक और आर्थिक विवादों के सामने सांस्कृतिक कूटनीति की सीमाओं को उजागर किया था। इन चुनौतियों के बावजूद, सांस्कृतिक कूटनीति सकारात्मक संबंध बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तनाव को कम करने और दोनों देशों को जोड़ने वाले सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में मदद करती है। बांग्लादेश में, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति सकारात्मक द्विपक्षीय संबंधों को आकार देने में सहायक रही है, विशेष रूप से बांग्लादेश की स्वतंत्रता के बाद 1971 के बाद के युग में। बंगाली भाषा और संस्कृति का साझा इतिहास बांग्लादेश के साथ भारत के सांस्कृतिक जुड़ाव का आधार है। भारत ने सक्रिय रूप से शैक्षिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया है, बांग्लादेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की है और शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा दिया है[12]।

सांस्कृतिक पहल, जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का संयुक्त उत्सव, जो बंगाली भाषा आंदोलन का स्मरण कराता है, दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक बंधन को और मजबूत करता है। बॉलीवुड फिल्में और भारतीय टेलीविजन नाटक बांग्लादेश में अत्यधिक लोकप्रिय हैं, जो सीमाओं से परे एक साझा सांस्कृतिक परिदृश्य में योगदान करते हैं। भारत ने सांस्कृतिक स्थलों के जीर्णोद्धार का समर्थन करके तथा पर्यटन और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से लोगों के बीच आदान–प्रदान को बढ़ावा देकर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पहलों की सफलता बांग्लादेश में भारत के प्रति आम तौर पर अनुकूल दृष्टिकोण में स्पष्ट है, भले ही कभी–कभी राजनीतिक तनाव होता है। हालाँकि, भारत को सांस्कृतिक प्रभुत्व की धारणाओं से बचने के लिए सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए, खासकर ऐसे देश में जहाँ राष्ट्रीय पहचान भाषाई और सांस्कृतिक स्वायत्तता से निकटता से जुड़ी हुई है।

श्रीलंका में, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति जटिल ऐतिहासिक संबंधों द्वारा आकार लेती है, जिसमें बौद्ध धर्म की साझा विरासत भी शामिल है, जो एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कड़ी के रूप में कार्य करती है। भारत ने श्रीलंका के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए अपनी बौद्ध विरासत का लाभ उठाया है, विशेष रूप से भारत में महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों जैसे बोधगया में तीर्थयात्रा पर्यटन को बढ़ावा देकर। ICCR श्रीलंका में सक्रिय रहा है, सांस्कृतिक उत्सवों, कला प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों का आयोजन करता रहा है जो भारत की सांस्कृतिक विविधता को उजागर करते हैं। श्रीलंकाई छात्रों के लिए छात्रवृत्ति सहित शैक्षिक आदान–प्रदान लोगों के बीच संबंधों को और बढ़ाता है[13]।

सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर के बीच संतुलन

दक्षिण एशिया में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जो अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती है। जबकि सांस्कृतिक कूटनीति दीर्घकालिक संबंध बनाने और सद्भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन इसे क्षेत्र की जटिल गतिशीलता को संबोधित करने के लिए आर्थिक और सैन्य रणनीतियों के साथ सावधानीपूर्वक संतुलित किया जाना चाहिए।

कई मामलों में, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति इसकी हार्ड पावर रणनीतियों का पूरक है, जो एक नरम प्रभाव प्रदान करती है जो अधिक मुखर नीतियों से संभावित प्रतिक्रिया को कम करने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, नेपाल में, कभी–कभार राजनीतिक तनाव के बावजूद, शैक्षिक आदान–प्रदान और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक भागीदारी एक सकारात्मक छवि बनाए रखने और भारत विरोधी भावनाओं का मुकाबला करने में मदद करती है। इसी तरह, बांग्लादेश में, सांस्कृतिक कूटनीति एक अनुकूल संबंध बनाए रखने में मदद करती है, भले ही भारत आर्थिक और सुरक्षा हितों का पीछा करता हो जो हमेशा बांग्लादेशी प्राथमिकताओं के साथ संरेखित नहीं हो सकते हैं।

हालांकि, ऐसे उदाहरण भी हैं जहां भारत की सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर रणनीतियां टकराव में आ सकती हैं। उदाहरण के लिए, श्रीलंका में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, विशेष रूप से तमिल संस्कृ

ति को बढ़ावा देने और तमिल अधिकारों का समर्थन करने के उसके प्रयास, कभी–कभी श्रीलंकाई सरकार के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने के उसके व्यापक रणनीतिक हितों के विपरीत रहे हैं। भारत के लिए चुनौती सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने और क्षेत्र में प्रमुख हितधारकों को अलग किए बिना अपने रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने के बीच सही संतुलन बनाना है[14]। इसके अलावा, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को अन्य क्षेत्रीय शक्तियों, विशेष रूप से चीन के प्रभाव का सामना करना होगा, जिसने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) जैसी पहलों के माध्यम से दक्षिण एशिया में अपनी खुद की सॉफ्ट पावर को प्रोजेक्ट करने की मांग की है।

5. चुनौतियाँ और सीमाएँ

क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और धारणाएँ

दक्षिण एशिया में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, जबकि मजबूत और बहुआयामी है, महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करती है, विशेष रूप से क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और अपने पड़ोसियों की धारणाओं के संदर्भ में। दक्षिण एशिया का भू–राजनीतिक परिदृश्य भारत और उसके पड़ोसियों, विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन के बीच लंबे समय से चले आ रहे तनावों से काफी प्रभावित है, जो दोनों ही भारत की सॉफ्ट पावर पहलों के लिए काफी बाधाएँ खड़ी करते हैं। पाकिस्तान के साथ प्रतिद्वंद्विता ऐतिहासिक संघर्षों, धार्मिक विभाजन और क्षेत्रीय विवादों, विशेष रूप से कश्मीर पर, में गहराई से निहित है। इन मुद्दों ने पाकिस्तान के साथ भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की प्रभावशीलता को गंभीर रूप से सीमित कर दिया है। साझा सांस्कृतिक, भाषाई और ऐतिहासिक संबंधों के बावजूद, दोनों देशों के बीच गहरी दुश्मनी ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहाँ भारत द्वारा की गई किसी भी सांस्कृतिक पहुँच को अक्सर पाकिस्तान में संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। लोगों से लोगों की पहल जैसे सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के प्रयास अक्सर द्विपक्षीय संबंधों पर हावी होने वाले राजनीतिक और सैन्य तनावों से कमजोर हो जाते हैं[15]।

दूसरी ओर, चीन भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के लिए एक अलग तरह की चुनौती पेश करता है। जैसे–जैसे चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसी पहलों के माध्यम से दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है, उसने इस क्षेत्र में सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव के लिए भारत के साथ प्रतिस्पर्धा करना शुरू कर दिया है। नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देश, जो परंपरागत रूप से भारत के प्रभाव क्षेत्र में हैं, आर्थिक निवेश और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए चीन की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। चीन की यह बढ़ती उपस्थिति भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के प्रयासों को जटिल बनाती है, क्योंकि अब उसे इस धारणा से जूझना होगा कि भारत इस क्षेत्र में एकमात्र या प्राथमिक शक्ति नहीं है। चीन की सॉफ्ट पावर रणनीति, जिसमें कन्फ्यूशियस संस्थान और सांस्कृतिक आदान–प्रदान शामिल हैं, सीधे भारत की पहलों के साथ प्रतिस्पर्धा करती है, जिससे भारत को सांस्कृतिक कूटनीति के प्रति अपने दृष्टिकोण में अनुकूलन और नवाचार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है[16]।

सांस्कृतिक कूटनीति की प्रभावशीलता

विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की प्रभावशीलता एक मिश्रित बैग है, जिसमें उल्लेखनीय सफलताएँ हैं, लेकिन साथ ही महत्वपूर्ण कमियाँ भी हैं। एक ओर, भारत ने अपनी सांस्कृतिक संपत्तियों – जैसे कि इसकी प्राचीन परंपराएँ, विविध कलाएँ और तेजी से बढ़ते मीडिया उद्योग – का सफलतापूर्वक लाभ उठाकर दक्षिण एशिया के कई हिस्सों में एक सकारात्मक छवि बनाई है और सद्भावना को बढ़ावा दिया है। सांस्कृतिक कूटनीति ने नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों के साथ दीर्घकालिक संबंधों को बनाए रखने में मदद की है, जहाँ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध गहरे और बहुआयामी हैं। शैक्षिक आदान–प्रदान, छात्रवृत्ति और सांस्कृतिक उत्सवों ने लोगों से लोगों के बीच मजबूत संबंध बनाए हैं जो भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाते हैं और इसके व्यापक कूटनीतिक उद्देश्यों का समर्थन करते हैं।

हालाँकि, सांस्कृतिक कूटनीति क्या हासिल कर सकती है, इसकी स्पष्ट सीमाएँ हैं, खासकर दक्षिण एशिया जैसे राजनीतिक और ऐतिहासिक रूप से जटिल क्षेत्र में। प्राथमिक कमियों में से एक है, उन मुद्दों को संबोधित करने के लिए सांस्कृतिक कूटनीति पर अत्यधिक निर्भरता जो मूल रूप से राजनीतिक या आर्थिक प्रकृति के हैं। उदाहरण के लिए, जबकि सांस्कृतिक कूटनीति सद्भावना बनाने में मदद कर सकती है, यह गहरे क्षेत्रीय विवादों, धार्मिक संघर्षों या आर्थिक असमानताओं को हल नहीं कर सकती है जो अक्सर क्षेत्रीय तनावों को बढ़ाती हैं। भारत–पाकिस्तान संबंध एक प्रमुख उदाहरण है जहाँ सांस्कृतिक कूटनीति ने व्यापक संघर्ष को कम करने में बहुत कम प्रभाव डाला है, क्योंकि रिश्ते के राजनीतिक और सैन्य आयाम अत्यधिक रूप से जुड़ाव की शर्तों को निर्धारित करते हैं। एक और सीमा पड़ोसी देशों में समाज के विभिन्न वर्गों में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की असमान पहुँच और प्रभाव है। जबकि बांग्लादेश और नेपाल जैसे देशों में शहरी अभिजात वर्ग भारतीय सांस्कृतिक उत्पादों से जुड़ सकते हैं और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भाग ले सकते हैं, ये पहल अक्सर ग्रामीण आबादी या हाशिए के समुदायों तक नहीं पहुँच पाती हैं, जो भारत विरोधी आख्यानों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं[17]।

6. निष्कर्ष और नीतिगत सिफारिशें

विश्लेषण दक्षिण एशिया में भारत की विदेश नीति को आकार देने में सॉफ्ट पावर की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है, खासकर सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक संबंध और लोकतांत्रिक मूल्य इसकी सॉफ्ट पावर रणनीति में महत्वपूर्ण संपत्ति हैं, जो इसे क्षेत्र में सद्भावना को बढ़ावा देने और राजनयिक संबंधों को मजबूत करने में सक्षम बनाती हैं। शैक्षिक आदान–प्रदान, भारतीय सिनेमा और टेलीविजन को बढ़ावा देना और आध्यात्मिक और धार्मिक कूटनीति, विशेष रूप से बौद्ध धर्म और योग का लाभ उठाना जैसी पहल पड़ोसी देशों में भारत के प्रभाव को बढ़ाने में सहायक रही हैं। हालाँकि, इन प्रयासों की प्रभावशीलता को अक्सर क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन के साथ, और भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को आधिपत्य के रूप में धारणाओं द्वारा चुनौती दी जाती है।

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए, अधिक सूक्ष्म और समावेशी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। इसमें पड़ोसी देशों में ग्रामीण और हाशिए के समुदायों तक पहुँच का विस्तार करना शामिल है, यह सुनिश्चित करना कि सांस्कृतिक कूटनीति के लाभ अधिक समान रूप से वितरित हों। इसके अतिरिक्त, भारत को युवा और तकनीक–प्रेमी दर्शकों के साथ जुड़ने के लिए डिजिटल तकनीकों को शामिल करके अपने सांस्कृतिक कूटनीति उपकरणों के आधुनिकीकरण में निवेश करना चाहिए। दक्षिण एशियाई देशों में स्थानीय सांस्कृतिक संस्थानों के साथ सहयोग करने से सांस्कृतिक प्रभुत्व की धारणाओं का मुकाबला करने में भी मदद मिल सकती है। इसके अलावा, भारत को अपनी सॉफ्ट पावर पहलों को अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों के साथ संतुलित करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि सांस्कृतिक कूटनीति व्यापक विदेश नीति लक्ष्यों के साथ संघर्ष करने के बजाय पूरक हो।

आगे के शोध में भारत की सॉफ्ट पावर के विस्तार में सोशल मीडिया और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती डिजिटल तकनीकों की भूमिका का पता लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, दक्षिण एशिया में युवाओं और ग्रामीण आबादी जैसे विशिष्ट जनसांख्यिकीय समूहों पर भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के प्रभाव का अध्ययन करने से सांस्कृतिक पहलों को अधिक प्रभावी ढंग से तैयार करने के बारे में अंतदृष्टि मिल सकती है।

संदर्भ सूची

[1] मोहन, सी. आर. (2019), "कल्चरल डिप्लोमेसी एंड इंडिया रीजनल स्ट्रेटेजी", कार्नेगी इंडिया, पृष्ठ 10–15।

[2] सूरी, जी. (2020), "सॉफ्ट पावरः द स्ट्रेटेजिक एसेट इन इंडिअस फॉरेन पालिसी", इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 15(3), 128–139।

[3] पंत, एच. वी. (2016), "इंडिया सॉफ्ट पावर एंड कल्चरल डिप्लोमेसीः ए क्रिटिकल एनालिसिस, रूटलेज हैंडबुक ऑफ इंडियन फॉरेन पालिसी", रूटलेज, पृष्ठ 276–290।

[4] हॉल, आई. (2017), "मल्टीएलाइनमेंट एंड इंडियन सॉफ्ट पावर", इंटरनेशनल स्टडीज, 54(3), 215–229।

[5] नाई, जे.एस. (2004), सॉफ्ट पावररू द मीन्स टू सक्सेस इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स, पब्लिक अफेयर्स, पृष्ठ 5–35।

[6] खुराना, ए. (2014), "इंडिया सॉफ्ट पावरः अ G20 इम्पेरटिवे", इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 9(2), 175–186।

[7] वैगनर, सी. (2010), "इंडिया सॉफ्ट पावरः प्रॉस्पेक्ट्स एंड लिमिटेशंस", इंडिया क्वार्टर्लीः ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 66(4), 333–342।

[8] मुखर्जी, आर. (2015), "बॉलीवुड डिप्लोमेसीः द ग्लोबल फुटप्रिंट ऑफ इंडिया सॉफ्ट पावर", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल पालिसी, 21(2), 138–152।

[9] सिंह, आर. (2011), "सॉफ्ट पावर इन इंडियन फॉरेन पालिसी", स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 35(5), 780–786।

[10] मेलोन, डी.एम. (2011), डस द एलीफैंट डांस? कंटेम्पररी इंडियन फॉरेन पालिसी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 317–340।

[11] थरूर, एस. (2012), पैक्स इंडिकाः इंडिया एंड द वर्ल्ड ऑफ द 21स्ट सेंचुरी, पेंगुइन, पृष्ठ 221–260।

[12] मदन, टी. (2014), "इंडिया रोल इन ग्लोबल सॉफ्ट पावरः अस्सेस्सिंग इट्स पोटेंशियल", ब्रूकिंग्स इंस्टीटूशन. पृष्ठ 1–20।

[13] राजगोपालन, एस. (2014), "इंडिया सॉफ्ट पावर एंड साउथ एशियाः चौलेंजेज एंड प्रॉस्पेक्ट्स", इंडिया रिव्यु, 13(1), 1–17।

[14] दत्ता, एस. (2012), "इंडिया पब्लिक डिप्लोमेसीः ए न्यू पैरादीगम", एशिया पसिफिक रिव्यु, 19(1), 31–46।

[15] सिंह, एस. (2017), "योगा एस ए सॉफ्ट पावरः द इंटरनॅशनलिजशन ऑफ इंडिया स्पिरिचुअल हेरिटेज", जर्नल ऑफ इंटरनेशनल एंड ग्लोबल स्टडीज, 8(1), 52–66।

[16] शर्मा, आर. (2015), "पब्लिक डिप्लोमेसी एंड इंडिअस सॉफ्ट पावर स्ट्रेटेजी", स्ट्रेटेजिक अफेयर्स, 10(3), 25–38।

[17]राव, ए. (2016), "सॉफ्ट पावर इन इंडिया नेबरहुड पालिसी", आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, पृष्ठ 25–35।